विचार बिन्दु

जो लोग मन को नियंत्रित नहीं करते। उनके लिए मन शत्रु के समान कार्य करता है। -श्रीमद्भगवद्गीता

नियम के सामने मनुष्य

'तुलसी बब्बा कह गए हैं'-तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर साप्ताहिक अतिथि विचार-शृंखला की यह चौथी कड़ी है जो न्याय पर केन्द्रित है। ओंकारेश्वर में ज्योतिर्लिंग के दर्शन करके हम ओंकार पर्वत की परिक्रमा पर निकले थे। नीचे नर्मदा का हरा जल था, ऊपर ढलान पर पत्थरों के बीच नए रोपे पौधों की कतारें। हर पौधे के चारों ओर माटी की गोल मेंड़ बनी थी, थाला, जिसमें डाला पानी जड़ों के पास ठहर सके। कुछ युवक-युवतियाँ नीचे के कुंड से बाल्टियाँ भरकर ऊपर ला रहे थे।

एक पेड़ के तने से गत्ते का टुकड़ा बँधा था। उस पर नाम लिखे थे और हर नाम के आगे एक ही संख्या: दस बाल्टी। नियम साफ था, सबके लिए बराबर। किसी के साथ पक्षपात नहीं।

पुष्पा ने गत्ता पढ़ा, फिर ढलान देखी। सबखों दस-दस बाल्टी। पै कोऊ नैचें के पौधन खों पानी दै रओ, कोऊ ऊपर की चढ़ाई पै हाँफ रओ। जा बराबरी आय कि निरी गिनती?

मैं कुछ कहता, उससे पहले बाल्टी रखती एक युवती ने अपनी हथेली दिखाई। हत्थे की धँसक से लाल लकीर पड़ गई थी। वह ऊपर की कतार पर थी। बोली कुछ नहीं, बस हथेली पोंछी और फिर नीचे उतर गई।

यही इस कड़ी का प्रश्न है: नियमसम्मत निर्णय अन्यायपूर्ण परिणाम दे, तब सुधार कहाँ हो? नियम हमें भरोसा देता है कि व्यवहार पहचान देखकर नहीं बदलेगा। उसका यह गुण बहुमूल्य है। पर जिन पर वह लागू होता है, उनकी परिस्थितियाँ बराबर नहीं होतीं। बराबर गिनती के भीतर असमान श्रम छिप सकता है।

राम भरत को चित्रकूट में राजधर्म समझाते हैं:-
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥
रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 315।

मुख अकेला खाता है, पर पोषण हर अंग तक विवेक से पहुँचाता है। दोहे का भार 'सहित बिबेक' पर है। मुख हाथ और पाँव को बराबर कौर नहीं देता; जिस अंग को जितनी जरूरत है, उतना पहुँचाता है। मुखिया का न्याय गिनती की समानता नहीं, आवश्यकता की पहचान है।

पुष्पा ने तुरंत टोका, पै विवेक कौन को? मुखिया अपनेई विवेक खों आखिरी बात मान बैठे, तौ?

प्रश्न ठीक जगह लगा था। मुखिया का विवेक भी जाँच माँगता है। इसी चित्रकूट की सभा में वसिष्ठ पहले स्वीकार करते हैं कि भरत के प्रति उनका अनुराग है, फिर राम से कहते हैं:

भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि॥
रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 258।

पहले आदर से सुनना, फिर विचार। निर्णय में सज्जनों की सम्मति, लोकमत, राजनीति और वेद, चारों का निचोड़ आए। वसिष्ठ का अपना झुकाव स्वीकार कर लेना इस दोहे से पहले की सबसे बड़ी बात है। जो निर्णय करता है, वह अपने झुकाव को पहले पहचान ले, तभी सुनवाई निष्पक्ष होती है। और सुनवाई का अर्थ हर माँग मान लेना नहीं; भरत की प्रार्थना सुनी गई, पर राम वन में ही रहे। सुनने वाले की जवाबदेही बची, मर्यादा भी।

मैंने अपनी आपत्ति रखी, पर छूट देने लगें तो हर कोई अपनी कठिनाई बताएगा। अपने आदमी को छूट, दूसरे को नियम, यही तो पक्षपात है।

जेई तौ हम पूछ रए हैं, पुष्पा बोलीं। छूट की सोई मेड़ चाउने, नईं तौ थाले के पानी घाईं सबरी बह जैहै।

मुख अकेला खाता है, पर पोषण हर अंग तक विवेक से पहुँचाता है। दोहे का भार 'सहित बिबेक' पर है। मुख हाथ और पाँव को बराबर कौर नहीं देता; जिस अंग को जितनी जरूरत है, उतना पहुँचाता है। मुखिया का न्याय गिनती की समानता नहीं, आवश्यकता की पहचान है।

ब्रह्मसूत्र में भोजन के नियम पर एक सूत्र है:-

सर्वान्नानुमतिश्च प्राणात्यये तद्दर्शनात्॥
ब्रह्मसूत्र 3.4.28।

प्राणसंकट में सब प्रकार के अन्न की अनुमति है, क्योंकि श्रुति में ऐसा दिखता है। शांकरभाष्य उषस्ति का प्रसंग खोलता है: अकाल में जूठे उड़द लेना जीवन बचाने के लिए अनिवार्य था, पर उसी के साथ दिया गया जूठा जल उन्होंने नहीं लिया, क्योंकि पानी अन्यत्र सुलभ था। अपवाद आवश्यकता जितना ही है, उससे एक घूँट भी अधिक नहीं। आज की संस्था के लिए यही कसौटी है: राहत का कारण लिखा जाए, वह कारण जाँचा जाए, और वैसी ही परिस्थिति वाले हर व्यक्ति को वही राहत मिले। पक्षपात व्यक्ति देखकर छूट देता है; न्याय परिस्थिति देखकर।

सच कहूँ तो जल ढोने, परिवहन के व्यय और ढलान पर सिंचाई की कठिनाई पर मैं वर्षों से बोलता-लिखता आया हूँ। फिर भी आँख के सामने का यह गत्ता मुझे पहली नजर में ठीक ही लगा था। सिद्धांत जानना और अपने सामने के आयोजन में उसे पहचान लेना, दोनों में दूरी होती है। पुष्पा के प्रश्न और उस युवती की हथेली ने वह दूरी पाटी।

ऊपर की कतार में एक थाले की मेंड़ टूटी थी। डाला गया पानी बहकर नीचे की पगडंडी पर फैल रहा था। गत्ते पर बाल्टियों की गिनती पूरी हो रही थी, पर उस पौधे तक पानी नहीं पहुँच रहा था। हिसाब काम का था, परिणाम का नहीं।

राम वन जाते समय लक्ष्मण को अयोध्या में रहने की सलाह देते हुए राजा की कसौटी बताते हैं:

रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥
रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 71 से पूर्व, चौपाई 3।

प्रजा का दुख शासन के उत्तरदायित्व से बाहर नहीं। राजा ने नियम पाले, प्रक्रिया पूरी की, फिर भी प्रजा दुखी है, तो दोष से मुक्ति नहीं। राम इसे किसी दूसरे पर नहीं, स्वयं शासक पर रखते हैं। परिणाम की जवाबदेही प्रक्रिया की शुद्धता से समाप्त नहीं होती।

तुलसी शासक के लिए चार उपमाएँ एक साथ रखते हैं:

माली भानु किसान सम नीति निपुन नरपाल।
प्रजा भाग बस होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल॥
दोहावली, दोहा 507।

माली हर पौधे की अलग सुध लेता है, सूर्य जल सोखकर वर्षा बनाकर लौटाता है, किसान बोने और काटने का समय पहचानता है। माली की उपमा आज इस ढलान पर सबसे सटीक बैठी। माली गिनती से नहीं, पौधे की दशा से पानी देता है।

हमने उस टोली से बात की। बातचीत में तय हुआ कि ऊपर की कतार का काम बारी-बारी से सब करेंगे, टूटी मेंड़ें पहले सुधारी जाएँगी, और गत्ते पर बाल्टियों के साथ यह भी लिखा जाएगा कि किस कतार में कितने थालों में पानी ठहरा। युवती का नाम ऊपर से हटकर मेंड़ सुधारने वालों में लिखा गया। अगली बार यह व्यवस्था निभेगी या नहीं, यह हम नहीं जानते। एक दिन का सुधार स्थायी न्याय नहीं होता; उसकी परीक्षा अगले पानी में है।

परिक्रमा में आगे नर्मदा फिर दिखीं। पुष्पा बोलीं, औ जौन अपनी बात कह न पावै, ऊकी सुध संस्था खुदई लेय। हर बेर अरजी लगाबे की नौबत काय आए? बा लली नें हथेली दिखाई हती, मुँह सें कछू नईं कहो हतो।

उनकी बात इस कड़ी का निष्कर्ष है। नियमसम्मत निर्णय अन्यायपूर्ण परिणाम दे, तब सुधार तीन जगह होगा: क्रियान्वयन में, जहाँ भूल परिस्थिति न देखने की है; नियम में, जहाँ भूल उसकी बनावट की है; और संस्था के स्वभाव में, जहाँ अपनी पुरानी राय बचाने का मोह परिणाम देखने से रोकता है। प्रभावित व्यक्ति अपनी बात रख सके, उसे कारण सहित उत्तर मिले, समान परिस्थिति वाले को समान राहत मिले, और काम का हिसाब बाल्टियों से नहीं, पौधों तक पहुँचे पानी से हो, यह भार निर्णय करने वाली संस्था का है, अरजी लगाने वाले का नहीं। नियम का सम्मान तभी टिकता है जब उसके सहारे मनुष्य न्याय पाने का भरोसा रख सके।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

गांव का बेटा, गांव का भाई बदल रहा है 52600 गांवों की किस्मत

सीएम भजनलाल शर्मा ने 3 साल में ग्रामीण समृद्धि का नया अध्याय लिखा, पं. दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय को खेत, चौपाल और कारखानों में साकार किया

पूर्णिमा जैमिनी

भारत की आर्थिक शक्ति, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की गाथा को गढ़ने में गाँवों और किसानों की भूमिका सदैव अग्रणी रही है। हरित क्रांति से लेकर खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता तक, गाँवों और किसानों ने अपने खून पसीने से सींच कर जिस भारत के स्वाभिमान की रक्षा की, आज वे गाँव और किसान ही इस नए भारत का स्वाभिमान हैं। भारत की अर्थव्यवस्था को अपने कठोर परिश्रम और मजबूत कंधों पर संभालने वाले किसानों ने कभी नहीं सोचा होगा कि खेत की मिट्टी में सने, दूध बेचने वाला कभी नेतृत्व भी कर सकेगा। उन्होंने देश की नींव के पत्थर बनने का संकल्प किया था लेकिन धोरां री धरती ने उन्हें अपने माथे का तिलक बनाया। ऐसे ही भारत के छोटे-से गांव अटारी से निकलकर आपणो अग्रणी राजस्थान के उद्घोष से देश-विदेश को गुंजायमान करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आज भी प्रदेश के गाँवों में ही सुकून की नींद पाते हैं। स्वयं को गाँव का बेटा कहने वाले भजनलाल शर्मा गाँव की मिट्टी, गाँव का अपनापन और गाँवों में बसती भारत की रीढ़ को मजबूत करने के लिए सीधे उनके द्वार पर पहुंच रहे हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का मानना है कि अपनों का विश्वास और स्नेह ही वह शक्ति है जो जनसेवा के संकल्पों को जन्म देती है। इस आत्मीय जुड़ाव की सहज अभिव्यक्ति जालौर जिले की पंसेरी ग्राम पंचायत में देखने को मिली, जहाँ ग्राम विकास चौपाल के बाद मुख्यमंत्री ने भेमाराम के निवास पर ग्रामीणों के साथ रात्रि भोजन किया। भजनलाल शर्मा का ग्रामीण प्रवास केवल विशेष अवसरों तक सीमित नहीं बल्कि उनकी कार्यशैली का निरंतर हिस्सा है। इसी क्रम में एक वाकया प्रतापगढ़ जिले का है, जहां बंबोरी गाँव में भी रात्रि विश्राम एवं ग्राम चौपाल के दौरान ग्रामीणों के बीच पहुंचकर आत्मीय संवाद हुआ। सीकर के जाजोद, अजमेर के कड़ैल, जालौर के पंसेरी, जयपुर के ठिकरिया, बांसवाड़ा के चुड़ादा, डूंगरपुर के धम्बोला और उदयपुर के बीड़ा समेत कई गाँवों में उन्होंने रात्रि चौपाल किए। जहां जन-आकांक्षाओं के अनुरूप मौके पर ही कई महत्वपूर्ण स्वीकृतियां जारी की गई।

ग्रामीण क्षेत्रों के समावेशी विकास में ग्राम रथ अभियान भजनलाल सरकार की वह निर्णायक पहल है, जिसने 'सरकार जनता के द्वार पर' के संकल्प को हकीकत में बदल दिया। यह अभियान साबित करता है कि डबल इंजन सरकार सिर्फ बड़े शहरों तक सीमित नहीं, बल्कि राजस्थान के दूर दराज के गाँव तक विकास और जागरूकता पहुँचा रही है। इसके साथ ही ग्रामीण महिलाएं अपनी बात रख सकें, सुरक्षित और सशक्त हो सकें इसको सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री का अनूठा संबल सखी अभियान भी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एक बेटे, एक भाई, एक पिता की तरह अपने गाँवो में बसे उन सभी परिवारों की चिंता और प्रगति के लिए मुख्यसेवक भजनलाल शर्मा का यह एक सफल प्रयास है।

इतना ही नहीं भजनलाल सरकार ने वर्षों से जूझ रही पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना को लेकर केंद्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच जल समझौते पर हस्ताक्षर कर राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया है। पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना से पूर्वी राजस्थान के 17 जिलों के हजारों गांवों को पेयजल व सिंचाई का स्थायी समाधान मिलेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश के हर गाँव और ढाणी के घरों में नल से जल पहुंचाना सुनिश्चित किया। दौसा और सवाई माधोपुर की दशकों पुरानी जल समस्या भी अब इतिहास बनने जा रही है। शेखावाटी अंचल के लिए 34,000 करोड़ रूपये का यमुना जल समझौता हुआ है, जिसके तहत 1,622 करोड़ रूपये से पनोती कृत्रिम जलाशय बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अथक प्रयासों से राजस्थान को इस परियोजना से 124 मिलियन क्यूबिक मीटर जल आवंटित हुआ है। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश के जल हिस्से का बड़ा भाग राजस्थान और दिल्ली को उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया, जिससे शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, चूरू, झुंझुनू) में पेयजल और सिंचाई की उपलब्धता मजबूत होगी। वहीं नर्मदा समझौते के तहत जालौर, बाड़मेर और बालोतरा के लिए अतिरिक्त पानी जुटाने की डीपीआर तैयार की जा रही है। इसके अलावा कोटा-बारां-झालावाड़ के लिए 7,355 करोड़ रूपये की 'परवन' परियोजना, गंगनहर के आधुनिकीकरण के लिए 1,742 करोड़ रूपये और बांसवाड़ा क्षेत्र में 2,500 करोड़ रूपये की माही कैनाल परियोजना पर काम जारी है। ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के लिए हर ग्राम पंचायत में चरणबद्ध अटल ज्ञान केंद्र और खेल मैदान तैयार हो रहे हैं। भजनलाल सरकार ने लैक्रोस जैसे उभरते ओलंपिक खेल को विशेष प्रोत्साहन दिया है। भजनलाल सरकार की पहल पर राजस्थान में ग्रामीण स्टार्टअप्स को भी मजबूत समर्थन मिल रहा है।

अंत्योदय केवल विचार नहीं आचरण की शैली है और इसीलिए मुख्यमंत्री की बैठक गांव के चौपाल में हो रही हैं। भजनलाल सरकार सचिवालय या बड़े दफ्तरों तक सीमित नहीं है। प्रदेश में अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक सरकार और सेवक दोनों उपस्थित होकर मौके पर शिकायतों का निपटारा कर रहे हैं। सड़क कनेक्टिविटी और कृषि सुविधाओं ने इस बदलाव को और मजबूत किया है। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 37,527 करोड़ रुपये से 51,790 किमी सड़कों का विकास; 9,704 करोड़ से लगभग 18,917 किमी नई सड़कें निर्मित हुई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में 12,311 करोड़ रूपये से अधिक खर्च कर 1,760 गाँव डामर सड़कों से जोड़े गए हैं। किसानों को मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि (अतिरिक्त सहायता), सोलर पंप, फार्म पौंड, तारबंदी, सूक्ष्म सिंचाई जैसी योजनाओं से लाभ डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से बिना किसी बिचौलिए के सीधा लाभार्थी के बैंक खाते में मिल रहा है। सड़कों के साथ अब सार्वजनिक परिवहन भी गाँव-ढाणियों तक पहुँच रहा है। सीकर जैसे जिलों में नौ ग्रामीण रूट तय कर दिए गए हैं। राज्य सरकार की 'आपणी बस - राजस्थान रोडवेज' पहल के तहत दूर-दराज के गाँवों को ब्लॉक और जिला मुख्यालयों से जोड़ा जा रहा है। इससे ग्रामीणों को शिक्षा, स्वास्थ्य, बाजार और रोजगार तक पहुँच आसान हो रही है। पश्चिमी राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में सौर ऊर्जा अब सिर्फ बिजली का साधन नहीं, बल्कि आजीविका का नया आधार बन रही है। श्रीगंगानगर जिले में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत जोधपुर डिस्कॉम के 12 जिलों में सबसे आगे रहा है। सीमावर्ती गाँवों को अब 'अंतिम' नहीं, बल्कि 'प्रथम' गाँव बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। केन्द्र सरकार की वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम- के तहत राजस्थान के 184 रणनीतिक सीमावर्ती गाँवों का समठा विकास किया जा रहा है। विश्वपटल पर राजस्थान की शान यहां की रंगारंग संस्कृति और सभ्यता है जिसको महिला शक्ति ने अपने कठोर तप से समृद्ध किया है। प्रदेश में 4.53 लाख स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से 52.43 लाख परिवार आजीविका संवर्धन से जुड़े हैं। लखपति दीदी पहल के तहत अब तक 18.49 लाख महिलाएँ लखपति दीदी बन चुकी हैं, जो वर्ष 2026-27 के 25 लाख के लक्ष्य का लगभग 74 प्रतिशत है। प्रयास गाँव की महिलाओं को बचत से स्वरोजगार और स्वरोजगार से उद्यिमता की ओर ले जा रहे हैं। डबल इंजन सरकार के सहयोग से केंद्र की 'भव्या' पहल के तहत जयपुर, जोधपुर, कोटा, बालोतरा, दौसा, खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना और जोधपुर-पाली-मारवार इंडस्ट्रियल एरिया को औद्योगिक हब के रूप में विकसित किया जा रहा है, साथ ही दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का लाभ उठाने के लिए दौसा-बांदीकुई औद्योगिक एवं लॉजिस्टिक्स हब की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री के विकास की यात्रा का स्पष्ट संदेश है कि विकसित भारत2047 और विकसित राजस्थान 2047 के लक्ष्य को सिद्ध करने का रास्ता हमारे गाँवों के घर-आंगन और गलियों से होकर गुज़रता है।

-पूर्णिमा जैमिनी,
यंग मीडिया सहायक,
डीआईपीआर

त्यौहारों पर किराये की मनमानी : बाजार की आजादी या उपभोक्ता की मजबूरी?

सुनील दत्त गोयल

त्यौहार आते ही देश में एक पुरानी समस्या फिर सामने खड़ी हो जाती है। ट्रेन की सीटें मिलना मुश्किल, हवाई टिकट कई गुना महंगे और होटल के कमरे सामान्य दिनों की तुलना में तीन से पाँच गुना तक महंगे। सवाल यह है कि आखिर त्यौहार और छुट्टियों के दौरान ऐसा क्या बदल जाता है कि कुछ दिनों के लिए यात्रा करना आम आदमी की पहुंच से बाहर हो जाता है?

सामान्य तर्क यही दिया जाता है कि यह डिमांड और सप्लाई का खेल है। मांग ज्यादा है तो कीमत ज्यादा होगी। बाजार अर्थव्यवस्था में यह बात पूरी तरह गलत भी नहीं है। एयरलाइन और होटल निजी व्यवसाय हैं। उन्हें मुनाफा कमाने का अधिकार है और सरकार को किसी निजी कंपनी की व्यावसायिक व्यवहार्यता खत्म करने वाला मूल्य नियंत्रण नहीं लगाना चाहिए। लेकिन सवाल वहां शुरू होता है जहां डायनेमिक प्राइसिंग और बाजार की वास्तविक प्रतिस्पर्धा के बीच अंतर खत्म हो जाता है।

बहुत कम लोग इस पूरी व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण परत को समझते हैं। बड़ी ट्रैवल एजेंसियां, टूर ऑपरेटर और ऑनलाइन ट्रैवल प्लेटफॉर्म कई बार होटल के कमरों और एयरलाइन की सीटों की बड़ी संख्या पहले से अंडरराइटिंग या ब्लॉक कर लेते हैं। कुछ मामलों में वे निश्चित संख्या में कमरे या सीटें बेचने की गारंटी भी देते हैं, जबकि अन्य मामलों में कॉन्ट्रैक्चुअल कमिटमेंट के जरिए इन्वेंट्री सुरक्षित करते हैं। इसके बाद इन कमरों और सीटों को मांग, उपलब्धता और व्यावसायिक रणनीति के आधार पर अलग-अलग चैनलों पर अलग-अलग कीमतों पर बेचा जा सकता है।

यह व्यवस्था अपने आप में गलत नहीं है। आखिर ट्रैवल एजेंसियां भी व्यवसाय करती हैं और उन्हें जोखिम उठाने के बदले मार्जिन कमाने का अधिकार है। समस्या तब पैदा होती है जब उपभोक्ता को यह पता ही नहीं होता कि वास्तविक मूल कीमत क्या है, किस स्तर पर कीमत बढ़ी है और अंतिम कीमत में किसका कितना मार्जिन शामिल है।

मान लीजिए किसी होटल ने किसी एजेंसी को पूरे वर्ष के लिए कमरे एक निश्चित दर पर उपलब्ध करा दिए। एजेंसी ने बड़ी संख्या में कमरे पहले ही सुरक्षित कर लिए। अब किसी विशेष त्यौहार पर शहर में मांग बढ़ गई। एजेंसी के पास उपलब्ध सीमित कमरों की कीमत बाजार की मांग देखकर बढ़ सकती है। होटल ने अपना जोखिम काफी हद तक पहले ही सुरक्षित कर लिया और एजेंसी के पास भी अपनी इन्वेंट्री है। लेकिन अंतिम उपभोक्ता को उस कमरे के लिए कई गुना अधिक भुगतान करना पड़ता है। यही सवाल एयरलाइन टिकटों पर भी लागू होता है। एयरलाइन अपने राजस्व और सीट ऑक्यूपेंसी को पहले से मैनेज करती है। अलग-अलग बुकिंग क्लास और किराया श्रेणियों के माध्यम से वह अपनी सीटें बेचती है। दूसरी ओर ट्रैवल एजेंसियां और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी अपने वितरण नेटवर्क और व्यावसायिक समझौतों के माध्यम से बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे में सरकार को यह तय करने की जरूरत है कि मुक्त बाजार और उपभोक्ता हित के बीच संतुलन कहां होना चाहिए। सरकार का समाधान यह नहीं होना चाहिए कि वह कह दे कि हर एयरलाइन टिकट या होटल का कमरा एक ही कीमत पर बेचा जाए। इससे बाजार की प्राकृतिक व्यवस्था खराब हो सकती है और कंपनियों की आर्थिक व्यवहार्यता प्रभावित हो सकती है। लेकिन एक बेहतर रास्ता निकाला जा सकता है।

सरकार यह अनिवार्य कर सकती है कि हर एयरलाइन और होटल को अपनी वास्तविक उपलब्ध इन्वेंट्री का एक पर्याप्त हिस्सा अपने स्वयं के आधिकारिक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सीधे उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध रखना होगा। ट्रैवल एजेंसियां और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म खत्म करने की जरूरत नहीं है। वे उपभोक्ता को सुविधा, तुलना, पैकेज और दूसरी सेवाएं देते हैं। लेकिन उपभोक्ता के पास कम से कम एक डायरेक्ट प्राइस बेंचमार्क जरूर होना चाहिए।

इसी के साथ सरकार एक दूसरा महत्वपूर्ण सुधार कर सकती है: रेफरेंस प्राइसिंग सिस्टम। मसलन, किसी टिकट या होटल के कमरे की कीमत को अचानक मनमाने स्तर तक बढ़ाने के बजाय पिछले दो से तीन महीनों के वास्तविक बुकिंग डेटा के आधार पर एक पारदर्शी मूल्य निर्धारण बेंचमार्क बनाया जा सकता है। यहां वॉल्यूम-वेटेड एवरेज प्राइस एक उपयोगी मॉडल हो सकता है। सरकार को ऐसा प्रावधान बनाने पर विचार करना चाहिए कि पिछले दो से तीन महीनों के वॉल्यूम-वेटेड औसत मूल्य की तुलना में किसी हवाई टिकट या होटल के कमरे का किराया दोगुने से अधिक न हो। यानी सामान्य परिस्थितियों में निर्धारित संदर्भ अवधि के औसत मूल्य की तुलना में अधिकतम दो गुना तक ही किराया लिया जा सके। इससे एयरलाइंस और होटल मांग बढ़ने पर उचित मुनाफा कमा सकेंगे, लेकिन त्योहारों और छुट्टियों के दौरान किरायों में होने वाली असामान्य बढ़ोतरी पर भी अंकुश लगाया जा सकेगा।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति 15 मार्च को टिकट बुक कर रहा है तो सिस्टम पिछले दो महीनों या निर्धारित संदर्भ अवधि में उसी रूट, समान यात्रा श्रेणी और समान परिस्थितियों में वास्तविक रूप से बिके टिकटों के वॉल्यूम-वेटेड औसत मूल्य को एक संदर्भ बिंदु मान सकता है। यदि 16 मार्च को बुकिंग हो रही है तो संदर्भ विंडो भी स्वत: ही आगे की गणना करेगी। इसका मतलब यह नहीं कि टिकट की कीमत हमेशा उसी औसत पर स्थिर रहे। मांग, समय, सीट उपलब्धता और परिचालन लागत के आधार पर कीमत में वृद्धि की अनुमति होनी चाहिए। लेकिन एक निर्धारित सीमा से अधिक असामान्य वृद्धि के लिए पारदर्शी कारण और नियम होने चाहिए। होटलों के लिए भी इसी तरह का मॉडल विकसित किया जा सकता है। समान कमरे की सामान्य दर, पिछले कुछ सप्ताह का वास्तविक बुकिंग मूल्य, सप्ताहांत का प्रभाव, स्थानीय आयोजन, कमरे की उपलब्धता और मांग जैसे कारकों को शामिल करके एक डायनेमिक लेकिन नियंत्रित प्राइसिंग बैंड बनाया जा सकता है। यहां एक और महत्वपूर्ण बात है। सरकार को केवल एयरलाइन और होटल पर ही निगरानी नहीं रखनी चाहिए। डिजिटल ट्रैवल मार्केट प्लेस और बड़े मध्यस्थों की भूमिका भी पारदर्शी होनी चाहिए। उपभोक्ता को यह जानकारी मिलनी चाहिए कि कीमत में मूल किराया या कमरे का शुल्क कितना है, टैक्स कितना है, प्लेटफॉर्म शुल्क कितना है और अन्य शुल्क कितना है। आज समस्या यह है कि उपभोक्ता अक्सर अंतिम कीमत देखकर चौंकता है, लेकिन उस कीमत के निर्माण की पूरी तस्वीर उसके सामने नहीं होती। सरकार चाहे तो एक राष्ट्रीय Travel Price Transparency Framework बना सकती है, जिसमें एयरलाइंस, होटल और ऑनलाइन ट्रैवल कंपनियों को मानकीकृत तरीके से मूल्य प्रदर्शित करना अनिवार्य किया जाए। त्यौहारों के दौरान विशेष निगरानी भी की जा सकती है। जैसे दिवाली, होली, ईद, क्रिसमस, नए साल, लंबे वीकेंड या बड़े धार्मिक आयोजनों के समय सरकार असामान्य मूल्य वृद्धि की निगरानी करे।

लेकिन यह निगरानी मूल्य नियंत्रण नहीं होनी चाहिए। सरकार को यह नहीं कहना चाहिए कि एयरलाइन अधिकतम 5,000 ही ले सकती है या होटल 3,000 से ज्यादा नहीं ले सकता। बल्कि यह देखना चाहिए कि कहीं बाजार की स्थिति का फायदा उठाकर कीमतों में असामान्य और अपारदर्शी वृद्धि तो नहीं की जा रही।

आखिर एयरलाइन और होटल भी व्यवसाय हैं। उनके विमानों को उड़ाना है, कर्मचारियों को वेतन देना है, ईंधन और रखरखाव का खर्च उठाना है। होटलों को स्टाफ, बिजली, रखरखाव और दूसरी लागतें उठानी हैं। इसलिए उन्हें मुनाफा कमाने का पूरा अधिकार है। मुद्दा मुनाफा रोकना नहीं है। मुनाफे की सीमा तय करना भी नहीं है। मुद्दा है बाजार को पारदर्शी, प्रतिस्पर्धी और उपभोक्ता के लिए निष्पक्ष बनाना।

भारत जैसे विशाल देश में त्यौहारों के समय यात्रा कोई विलासिता नहीं रह जाती। करोड़ों लोग अपने परिवारों से मिलने, धार्मिक यात्राओं, सामाजिक कार्यक्रमों और जरूरी कामों के लिए यात्रा करते हैं। ऐसे समय में अगर टिकट और होटल के कमरे अचानक इतने महंगे हो जाएं कि सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार यात्रा ही न कर सके, तो सरकार को कम से कम बाजार की संरचना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए। समाधान प्रतिबंध नहीं, स्मार्ट रेगुलेशन है। एयरलाइन और होटल को कमाने दीजिए। ट्रैवल एजेंसियों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को भी अपना कारोबार करने दीजिए। लेकिन उपभोक्ता को भी इतना अधिकार दीजिए कि वह जान सके कि वह किस कीमत के लिए भुगतान कर रहा है और उस कीमत का आधार क्या है। मुक्त बाजार का अर्थ यह नहीं कि उपभोक्ता को बाजार की जानकारी से मुक्त कर दिया जाए। असली प्रतिस्पर्धा तभी होगी जब उपभोक्ता के पास विकल्प, जानकारी और पारदर्शी कीमत तीनों हों।

-रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

राशिफल

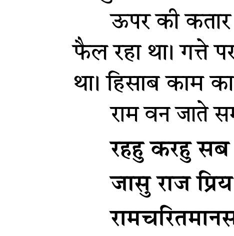

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 1 नवम्बर, 2026

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत-2083, आश्लेषा नक्षत्र पुष्य नक्षत्र रात्रि 4:31 तक, साध्य योग दिन 2:39 तक, बव करण दिन 2:52 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति- सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज राजयोग सूर्योदय से दिन 2:52 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और रविपुष्य योग सूर्योदय से रात्रि 4:31 तक है। आज कालाष्टमी, अहोई अष्टमी है। आज अरुणोदय काल में मथुरा के राधा कुण्ड में स्नान है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- चर 8:03 से 9:25 तक, लाभ-अमृत 9:25 से 12:10 तक, शुभ 1:33 से 2:55 तक।

राहुकाल- 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:40, सूर्यास्त 5:40

मेष
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कर्क
मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणो से मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक एवं व्यावसायिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है।